

सिंहस्थ 2028: महाकाल की नगरी में 8,000+ करोड़ से बिछ रहा फोरलेन-सिक्सलेन का ‘महाजाल’

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के दूरदर्शी विजन से आकार ले रही भृत्य और आधुनिक अवंतिका

360 डिग्री कनेक्टिविटी से सुगम होगी 40 करोड़ श्रद्धालुओं की राह

अवन्तिकायां विहिता सुविधा, प्राची च नवीना संप्रवर्धते।
अधोसंरचनासु विकासजालेन, भाविपीढी तु मोदते मुदा॥

अर्थात: उज्जैन की पावन भूमि पर प्राचीन परंपरा और नवीन तकनीक का सुंदर संगम हो रहा है। विकास एवं अधोसंरचना के इस महाजाल से आने वाली पीढ़ियां सदैव लाभान्वित और सुखी रहेंगी।



सनातन संस्कृति के ध्वजवाहक और विश्व प्रसिद्ध 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक भगवान श्री महाकालेश्वर की पावन नगरी उज्जैन में वर्ष 2028 में आयोजित होने वाले अलौकिक, भव्य और ऐतिहासिक ‘सिंहस्थ महाकुंभ’ को लेकर व्यापक स्तर पर तैयारियों का महाअभियान जारी है। इस अलौकिक महासमामग में देश-विदेश से आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं की यात्रा को सुगम, सुरक्षित, और बाधा-रहित बनाने के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा बुनियादी ढांचे का अभूतपूर्व कायाकल्प किया जा रहा है। उज्जैन शहर सहित आसपास के सीमावर्ती जिलों, राज्यों और राष्ट्रीय राजमार्गों को जोड़ने वाले कनेक्टिविटी नेटवर्क पर अत्यधिक तीव्र गति से कार्य संचालित किया जा रहा है।

सिंहस्थ 2028 की महातैयारियों को लेकर संभागायुक्त आशीष सिंह ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के दूरदर्शी नेतृत्व की सराहना करते हुए बताया कि मुख्यमंत्री जी की सोच केवल तात्कालिक आयोजनों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे उज्जैन को आगामी 50 वर्षों की जरूरतों के अनुरूप विश्वस्तरीय धार्मिक व सांस्कृतिक राजधानी के रूप में विकसित कर रहे हैं। सिंहस्थ महापर्व के दौरान धर्मनगरी में करीब 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों के आगमन का अनुमान व्यक्त किया जा रहा है। इतने विशाल जनसैलाब की सुगम आवाजाही को संभालना और पूरे उज्जैन क्षेत्र को ट्रैफिक जाम से पूर्णतः मुक्त रखना प्रशासन का मुख्य ध्येय है। इसी दूरगामी विजन की पूर्ति के लिए मध्य प्रदेश शासन, राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण और लोक निर्माण विभाग के समन्वय से शहर के चारों तरफ 8 से अधिक प्रमुख फोर-लेन, सिक्स-लेन और ग्रीनफील्ड हाईवे का एक शक्तिशाली ‘सुरक्षा चक्र’ और कनेक्टिविटी नेटवर्क बिछाया जा रहा है। सड़क, परिवहन और अधोसंरचना के इन दूरगामी विकास कार्यों का मुख्य श्रेय

मध्य प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कुशल एवं संकल्पबद्ध नेतृत्व को जाता है। निसंदेह, इससे पूर्व आयोजित हुए सिंहस्थ महाकुंभों के समय भी तत्कालीन मुख्यमंत्रियों द्वारा उज्जैन में कई महत्वपूर्ण विकास कार्य और सौंदर्यीकरण कराए गए थे। परंतु वर्ष 2028 में आयोजित होने जा रहा यह सिंहस्थ महापर्व अपनी भव्यता, आधुनिक तकनीक और अधोसंरचनात्मक मजबूती के मामले में सर्वथा अद्वितीय, ऐतिहासिक और अविस्मरणीय होने वाला है। इस महा-अभियान की सबसे विशेष बात यह है कि विकास कार्यों में समाज के हर वर्ग और स्वयं मुख्यमंत्री की अभूतपूर्व जनभागीदारी देखने को मिल रही है। शहर के विभिन्न अंदरूनी प्रमुख मार्गों के चौड़ीकरण के दौरान जब कई निजी व धार्मिक ढाँचे प्रभावित हुए, तो आम नागरिकों और विभिन्न समाजों के साथ-साथ स्वयं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी अपने पैतृक मकान के प्रभावित हिस्से को विकास कार्य के लिए समर्पित कर एक मिसाल कायम की है।

कलेक्टर रोशन कुमार सिंह ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के जनहितैषी विजन की सराहना करते हुए बताया कि मुख्यमंत्री जी की मंशा के अनुसार ही निर्माण कार्यों की गुणवत्ता और समयबद्धता सुनिश्चित की जा रही है। उन्होंने कहा कि जो फोर-लेन, सिक्स-लेन, एलिवेटेड कॉरिडोर, नए ब्रिज और बायपास नेटवर्क आकार ले रहे हैं, वे आगामी 50 वर्षों की आवश्यकताओं, उज्जैन के भविष्यगत विस्तार और आर्थिक-औद्योगिक विकास के दीर्घकालिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं। इन निर्माण कार्यों से जहाँ एक ओर सिंहस्थ में आने वाले श्रद्धालुओं को त्वरित और सुगम पहुँच मिलेगी, वहीं दूसरी ओर इसका सीधा और स्थायी लाभ उज्जैनवासियों, स्थानीय व्यवसायियों तथा उनकी आने वाली कई पीढ़ियों को निरंतर मिलता रहेगा।

इंदौर-उज्जैन ग्रीनफील्ड 4-लेन कॉरिडोर

इंदौर एयरपोर्ट, टैक्सियों और मालवा रीजन से आने वाले यात्रियों को त्वरित व बिना जाम वाली कनेक्टिविटी देने के लिए 2,000 करोड़ से अधिक की लागत से 48.1 किलोमीटर लंबा नया डेडिकेटेड ग्रीनफील्ड 4-लेन मार्ग तैयार किया जा रहा है। यह कॉरिडोर इंदौर-उज्जैन के मुख्य तीर्थयात्री मार्ग के अत्यधिक यातायात भार को पूरी तरह से विभाजित कर देगा, जिससे पुरानी सड़क पर दबाव नगण्य हो जाएगा। इसके निर्माण से इंदौर एयरपोर्ट से उज्जैन महाकाल मंदिर तक का सफर बिना किसी रुकावट के रिकॉर्ड समय में पूरा होगा, जिससे वीआईपी और सामान्य श्रद्धालुओं दोनों को समान रूप से समय की भारी बचत होगी।

उज्जैन-जावरा 4-लेन ग्रीनफील्ड हाईवे

5,017 करोड़ की भारी-भरकम लागत से निर्मित हो रहा 98.7 किलोमीटर लंबा यह एक्सप्रेस-नियंत्रित ग्रीनफील्ड हाईवे रतलाम, जावरा और राजस्थान सीमा की ओर से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए गेमचेंजर साबित होगा। यह बिल्कुल नया हाई-स्पीड हाईवे बाहरी राज्यों के वाहनों को शहर के संकीर्ण इलाकों में प्रवेश करके बिना सीधे उत्तर-पश्चिमी सैटेलाइट पार्किंग जोन और बड़े बस टर्मिनलों तक पहुँचाएगा। इस हाईवे से राजस्थान, पंजाब और हरियाणा से आने वाले श्रद्धालुओं की यात्रा बेहद तेज, सुरक्षित और सुगम हो जाएगी तथा उज्जैन शहर के भीतरी मुख्य प्रवेश मार्गों पर लगने वाले लंबे जाम से पूरी तरह मुक्ति मिल जाएगी।

उज्जैन-झालावाड़ राजस्थान कॉरिडोर

राजस्थान, कोटा और जयपुर की दिशा से आने वाले लाखों श्रद्धालुओं की सुगम आवाजाही के

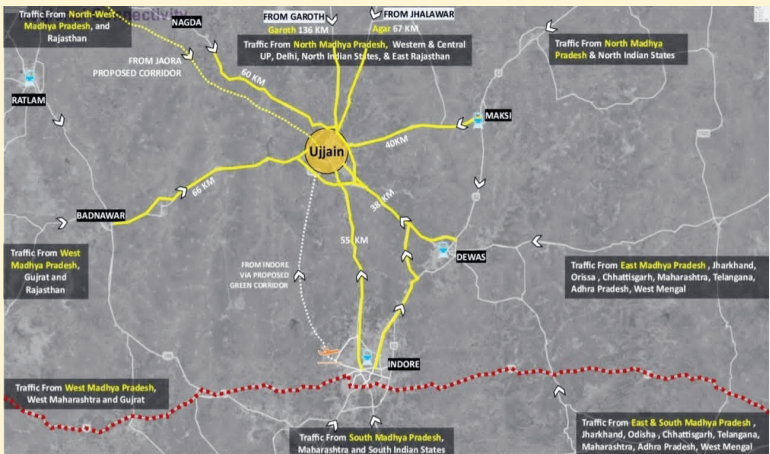
लिए राष्ट्रीय राजमार्ग 552तक के तहत 133 किलोमीटर लंबे उज्जैन-झालावाड़ मार्ग को फोर-लेन में अपग्रेड करने की डीपीआर स्वीकृत हो चुकी है। यह विशेष रणनीतिक कॉरिडोर उत्तरी भारत और राजस्थान के सीमावर्ती जिलों से आने वाले ट्रैफिक को बिना किसी बाधा के सीधे उज्जैन के आउटर रिंग रोड से जोड़ेगा। इसके बनने से कोटा-झालावाड़ मार्ग से प्रवेश करने वाली यात्री बसों और निजी गाड़ियों को आगर रोड के आउटर होलिंग्स एरिया और सैटेलाइट पार्किंग तक पहुँचने में सुविधा होगी, जिससे आगर रोड पर यातायात का दबाव पूरी तरह नियंत्रित रहेगा।

देवास-उज्जैन व बायपास नेटवर्क

भोपाल, देवास और पूर्वी मध्य प्रदेश की तरफ से आने वाली गाड़ियों को नियंत्रित करने के लिए एनएच-752डी के तहत 41.42 किलोमीटर लंबा देवास-उज्जैन कॉरिडोर हाइब्रिड एन्यूटी मॉडल (एवएम) पर पूरी क्षमता से विकसित किया गया है। यह मार्ग भोपाल, जबलपुर और इंदौर की ओर से आने वाले भारी वाहनों और चार-पहिया गाड़ियों को उज्जैन शहर के भीतर घुसाए बिना सीधे बाहरी रिंग रोड और होलिंग्स एरिया में भेज देगा। इसके साथ ही देवास बाईपास लिंक से जुड़ने के कारण शाजापुर और पूर्वी रीजन्स की गाड़ियाँ भी सीधे रिंग रोड से होकर बिना किसी आंतरिक शहर ट्रैफिक के सैटेलाइट पार्कस तक पहुँचेंगी।

तिमरवानी-थांदला-बदनावर एक्सप्रेसवे लिंक

गुजरात और महाराष्ट्र से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए बदनावर-पेटलावद-थांदला-तिमरवानी (एनएच-752डी) 80.45 किलोमीटर लंबे मार्ग को विशेष रणनीतिक गलियारे के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह मार्ग सीधे देश के सबसे आधुनिक दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे से जुड़कर पश्चिमी भारत के यात्रियों को सीधा,



सुगम और हाई-स्पीड एक्सप्रेस प्रदान करेगा। इस एक्सप्रेसवे लिंक के बन जाने से मुंबई, सूरत, अहमदाबाद और वडोदरा की ओर से आने वाले श्रद्धालु बिना किसी परेशानी के एक्सप्रेसवे के जरिए सीधे उज्जैन की पश्चिमी परिधि में बने भव्य सैटेलाइट पार्किंग जोन तक सुरक्षित और बेहद कम समय में पहुँच सकेंगे।

उज्जैन-मक्सी 4-लेन बायपास मार्ग

शाजापुर, भोपाल और पूर्वी मध्य प्रदेश से आने वाली गाड़ियों के लिए लगभग 35.1 करोड़ की अनुमानित लागत से 50 किलोमीटर श्रेणी का उज्जैन-मक्सी 4-लेन मार्ग स्वीकृत किया गया है। यह नया मार्ग शाजापुर और भोपाल की दिशा से आने वाले वाहनों के लिए एक बेहतरीन वैकल्पिक बाईपास के रूप में कार्य करेगा। इसके चालू होने से मक्सी और कानपुर-झांसी रूट से आने वाला भारी यातायात मुख्य शहर में प्रवेश किए बिना बाहरी रिंग रोड के जरिए सीधे उत्तरी एवं पूर्वी होलिंग्स जोन्स तक चला जाएगा, जिससे मक्सी रोड और चामुंडा माता चौराहे पर बनने वाली जाम की स्थिति हमेशा

के लिए खत्म हो जाएगी।

उज्जैन-गरोट 4-लेन कॉरिडोर

उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी राज्यों से आने वाले भारी वाहनों, ट्रकों और यात्री बसों के सुगम संचलन के लिए एनएच-752डी पैकेज के तहत 136 किलोमीटर लंबा उज्जैन-गरोट 4-लेन कॉरिडोर तेजी से निर्मित हो रहा है। यह विशाल कॉरिडोर दिल्ली, आगरा, ग्वालियर और राजस्थान के गरोट रूट से आने वाले ट्रैफिक को शहर के मुहाने पर ही डिस्ट्रीब्यूट कर देगा। बाहरी वाहनों को शहर के विभिन्न संपर्क मार्गों पर व्यवस्थित रूप से विभाजित करके यह हाईवे न केवल सिंहस्थ के दौरान बल्कि आम दिनों में भी उज्जैन को उत्तर भारत के प्रमुख व्यापारिक मार्गों से जोड़ने वाला सबसे सुरक्षित और तेज यातायात गलियारा साबित होगा।

चिमनगंज-इंदौर रोड एलिवेटेड फ्लाईओवर

शहर के आंतरिक ट्रैफिक को राहत देने के लिए 7945 करोड़ की लागत से लगभग 5 किलोमीटर लंबा 2-लेन एलिवेटेड कॉरिडोर बनाया जा रहा



संपर्क मार्गों, जैसे खजूरवाली मस्जिद से गणेश चौक, केडी गेट, तेलीवाड़ा, टंकी चौराहा, गुदरी चौराहा से हरसिद्धि पाल तथा निलगंगा मार्ग का कायाकल्प किया जा रहा है। पूरे नेटवर्क के अंतर्गत करीब 350 किलोमीटर से अधिक की नई सड़कों का जाल और क्षिप्रा नदी के तटों पर लगभग 29 किलोमीटर लंबे आधुनिक घाटों का निर्माण कार्य भी तेजी से प्रगति पर है। दताना-माताना क्षेत्र में हवाई पट्टी के विस्तार सहित इंदौर-उज्जैन मार्ग के सुदृढीकरण से आने वाले समय में मालवा अंचल का आर्थिक परिदृश्य पूरी तरह बदल जाएगा।



कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे एक नजर में

कुल स्वीकृत बजट: 8,000+ करोड़ से अधिक
आगमन अनुमान: 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालु एवं पर्यटक
प्रमुख सड़क कॉरिडोरस : 8 फोर-लेन, सिक्स-लेन एवं ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस-वे
नदी पुल और फ्लाईओवर्स: क्षिप्रा नदी पर 17 नए बड़े पुल एवं 4 नए रेलवे ओवरब्रिज
सैटेलाइट पार्किंग स्थल: बाहरी सीमाओं पर 15 अत्याधुनिक मेगा पार्किंग जोन
हरित परिवहन: 500 से अधिक शटल ई-बसें एवं समर्पित पेडैस्ट्रियन कॉरिडोरस
आंतरिक सड़क सुदृढीकरण: 40 से अधिक प्रमुख शहरी एवं पहुँच मार्गों का चौड़ीकरण

है। यह फ्लाईओवर चिमनगंज मंडी से इंदौर रोड तक शहर के सबसे व्यस्ततम चौराहों और घनी आबादी वाले इलाकों के ऊपर से गुजरेगा। यह एलिवेटेड रोड लगभग 40 प्रतिशत बाहरी ट्रैफिक को सीधे उठाकर महाकाल लोक और शहर के दक्षिणी हिस्से की ओर बिना किसी रुकावट के निकाल देगा। इसके बनने से स्थानीय नागरिकों को अपने दैनिक आवागमन में कोई परेशानी नहीं होगी और बाहरी श्रद्धालु भी बिना किसी स्थानीय चौराहे पर रुके सीधे अपने गंतव्य और पार्किंग की ओर बढ़ सकेंगे।

उज्जैन-बदनावर 4-लेन हाईवे

धार, झाबुआ, गुजरात और महाराष्ट्र की ओर से आने वाली गाड़ियों को संभालने के लिए 69.10 किलोमीटर लंबा उज्जैन-बदनावर 4-लेन मार्ग युद्धस्तर पर तैयार किया जा रहा है। यह हाईवे उज्जैन के पश्चिमी प्रवेश द्वार पर ही भारी मालवाहकों, यात्री बसों और निजी गाड़ियों को रोककर श्रद्धालुओं को पश्चिमी क्षेत्र की सैटेलाइट पार्किंग और बस टर्मिनलों तक पहुँचाने में मदद करेगा। इस चौड़ीकृत मार्ग के कारण धार और झाबुआ से आने वाली गाड़ियों को संकरे रास्तों से नहीं गुजरना पड़ेगा, जिससे पश्चिमी सीमा पर ट्रैफिक का प्रवाह एकसमान बना रहेगा और शहर के भीतरी व्यापारिक इलाकों पर वाहनों का दबाव शून्य हो जाएगा।

क्षिप्रा नदी पर 17 नए पुल व कनेक्टिंग घाट

क्षिप्रा नदी के दोनों तटों (रामघाट, दत्त अखाड़ा, नृसिंह घाट, त्रिवेणी घाट आदि) को आपस में जोड़ने के लिए 482.35 करोड़ की लागत से 17 नए नदी पुलों का निर्माण किया जा रहा है। ये सभी पुल क्षिप्रा नदी के स्नान घाटों से मात्र 200 मीटर के दायरे में बनाए जा रहे हैं ताकि बुजुर्ग और दिव्य स्नान के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को पार्किंग या बस ड्रॉप पॉइंट से नदी तट तक अधिक पैदल न चलना पड़े। इन पुलों

के माध्यम से नदी के दोनों ओर क्राउड मैनेजमेंट बेहद आसान हो जाएगा और किसी एक घाट पर अत्यधिक दबाव बनने पर भीड़ को दूसरे घाट पर तुरंत डायवर्ट किया जा सकेगा।

15 मेगा सैटेलाइट पार्किंग व होलिंग्स हब

उज्जैन में प्रवेश करने वाले सभी 8 प्रमुख राजमार्गों के मुहाने पर 15 विशाल मेगा सैटेलाइट पार्किंग जोन बनाए जा रहे हैं, जिनकी कुल क्षमता 50,000 से अधिक वाहनों को एक साथ खड़ा करने की होगी। अत्यधिक भीड़ या शाही स्नान के दौरान शहर से 10-15 किमी दूर बने आउटर होलिंग्स एरिया में गाड़ियों को रोक-रोककर चरणबद्ध तरीके से पार्किंग की ओर छोड़ा जाएगा। इन पार्कस में श्रद्धालुओं के लिए विश्राम गृह, पेयजल, स्वच्छ शौचालय, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र और डिजिटल सहायता केंद्र जैसी सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे यात्रियों को रुकने में कोई असुविधा न हो।

3-लेयर शटल बस और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी

सैटेलाइट पार्किंग में गाड़ियाँ पार्क करने के बाद श्रद्धालुओं को घाटों और मंदिरों तक पहुँचाने के लिए 500 से अधिक लो-फ्लोर और इलेक्ट्रिक ई-बसों का शटल नेटवर्क चलेगा। यह व्यवस्था तीन स्तरों में काम करेगी, जहाँ आउटर और मिडिल लूप से बसें श्रद्धालुओं को आंतरिक ड्रॉप पॉइंट्स (जैसे हरिफाटक) तक लाएँगी। अंतिम इनर लूप में केवल पैदल वाँकड़े और दिव्यांगों के लिए गोल्फ कार्ट्स उपलब्ध होंगे। शहर के भीतरी मुख्य मंदिर क्षेत्र में निजी डीजल-पेट्रोल वाहनों का प्रवेश पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा, जिससे संपूर्ण महाकाल क्षेत्र प्रदूषण-मुक्त, शांत और सुरक्षित पैदल यात्री गलियारों के रूप में कार्य करेगा।